शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अंतर्राष्ट्रीय सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-5.375
Vol.-3; issue-3 (July-Sept.) 2026
Page No- 100-110
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :

1. वीणा द्विवेदी
(शोधार्थी), हिन्दी विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुज़फ्फरपुर।

2. डॉ. सतीश कुमार राय
शोध-निर्देशक, प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुज़फ्फरपुर।

Corresponding Author :

वीणा द्विवेदी
(शोधार्थी), हिन्दी विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुज़फ्फरपुर।

दहन राग : एक अनुशीलन

शोध-सार : समकालीन हिन्दी कविता के महत्त्वपूर्ण कवि निलय उपाध्याय का काव्य-संग्रह दहन राग आधुनिक भारतीय समाज की विसंगतियों, राजनीतिक-सामाजिक विडम्बनाओं, सांस्कृतिक संकटों तथा मानवीय संवेदनाओं का सशक्त काव्य-दस्तावेज़ है। प्रस्तुत आलेख में दहन राग का कथ्य, शिल्प, भाषा, संवेदना तथा वैचारिक पक्ष के आधार पर विश्लेषण किया गया है। संग्रह की कविताओं में पौराणिक, ऐतिहासिक और मिथकीय प्रसंगों के माध्यम से समकालीन यथार्थ का प्रभावशाली चित्रण हुआ है। कवि ने लोकजीवन, ग्रामीण संस्कृति, प्रकृति, पर्यावरण, सत्ता, बाज़ारवाद, सामाजिक असमानता तथा मानवीय मूल्यों के ह्रास जैसे विषयों को गहन संवेदनशीलता और प्रखर वैचारिक दृष्टि के साथ अभिव्यक्त किया है। विशेष रूप से ताजमहल, दहन राग, बाबा सुकरात, घंटा कवि तथा मशाल कथा जैसी कविताएँ कवि की सामाजिक प्रतिबद्धता, ऐतिहासिक चेतना और रचनात्मक दृष्टि को स्पष्ट करती हैं। भाषा की सहजता, लोकजीवन से जुड़ी शब्दावली, प्रतीकात्मकता, बिंब-विधान इतिवृत्तात्मक तथा आख्यानात्मक शैली इस कृति को समकालीन हिन्दी कविता की उल्लेखनीय उपलब्धि सिद्ध करते हैं।

बीज शब्द : शोध-आलेख के आधार पर उपयुक्त बीज शब्द—लोक चेतना, मिथकीय चेतना, इतिहास-बोध, पर्यावरण, भाषा-शिल्प, दहन राग, निलय उपाध्याय, समकालीन हिन्दी कविता, सामाजिक यथार्थ, विसंगति, मानवीय संवेदना, मिथकीय आख्यान, ऐतिहासिक चेतना, पर्यावरण संकट, ग्रामीण जीवन, साहित्य और समाज, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, राजनीतिक विडम्बना, ताजमहल कविता, बेड़िया समुदाय, स्त्री-विमर्श, लोक जीवन, सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक सरोकार।

मूल आलेख : समकालीन हिन्दी कविता के सुपरिचित हस्ताक्षर निलय उपाध्याय की प्रकाशित काव्य-कृति 'दहन राग' आधुनिक विसंगतियों एवं तिक्त-कटु अनुभवों का खुला आख्यान है। यह कृति विवरणात्मकता, नाटकीयता, संवेदना, भाषा-भाव-शिल्प, चिंतन तथा विचार सभी दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। इस कविता की मुख्य विशेषता है, प्राचीन के धरातल पर वर्तमान का मूल्यांकन।

संकलन में कुल 68 कविताएँ हैं—1. 'जब कह नहीं पाता', 2. 'बहेलिया और कवि', 3. 'कालिदास', 4. 'बाबा सुकरात', 5. 'घंटा कवि', 6. 'कबीर', 7. 'कबीर नगर', 8. 'दहन राग', 9. 'लंका दहन', 10. 'मशाल कथा', 11. 'चंदेसर दारोगा', 12. 'गप्पी गोपाल', 13. 'बागी बलिया', 14. 'सिया के राम', 15. 'मेरा प्यार', 16. 'प्यार', 17. 'उठी हूक', 18. 'ताजमहल', 19. 'रंग आलता', 20. 'वजह माँ के मौत की', 21. 'ये देखो', 22. 'लाल केशर बुआ', 23. 'अँठई', 24. 'यह मैं चाहता था', 25. 'रेजगारी की थैली', 26. 'भौजी का झुमका', 27. 'आदम राग', 28. 'पुरवा बयार', 29. 'सावन', 30. 'मेरे गाँव जाओ बरखा', 31. 'आग में भीगी', 32. 'इन्द्रधनु', 33. 'मेरी देह पर', 34. 'जाना', 35. 'पिथौरागढ़ की बस में', 36. 'देवलथल की बदलियाँ', 37. 'सतुआन', 38. 'कतरनी', 39. 'कुलवाँसी आम', 40. 'बढ़ावन', 41. 'हल्दी', 42. 'लाजवंती', 43. 'मूली का अचार', 44. 'अक्षत' यौवन', 45. 'आम', 46. 'जीभ से कुछ सवाल', 47. 'पुरखों ने कहा था', 48. 'नाम', 49. 'फटा हुआ समय', 50. 'पैरासीटामोल', 51. 'कुछ तो गड़बड़ है', 52. 'तीन बार भौंकते हैं कुत्ते', 53. 'मूँछ', 54. 'पाचवाँ पाया', 55. 'नागपंचमी', 56. 'खुजली', 57. 'लूट कला बन चुकी है', 58. 'शिकारी', 59. 'कोई आ रहा है', 60. 'अँधेरा', 61. 'रक्त की नदी', 62. 'उसके आने की तारीख', 63. 'उजास की व्याख्या', 64. 'आपदा में फँसे लोग', 65. 'मच्छर', 66. 'वह आ गया है', 67. 'साँप के गले में छुछुंदर', 68. 'स्वागत'।

इस संकलन की कुछ कविताएँ पौराणिक-ऐतिहासिक एवं मिथकीय आख्यानों पर आधारित हैं, जैसे—'बहेलिया और कवि', 'दहन राग', 'लंका दहन', 'बागी बलिया', 'सिया के राम' तथा 'ताजमहल' आदि। कुछ कविताएँ प्राचीन एवं आधुनिक साहित्यकारों, चिंतकों एवं दार्शनिकों को आधार बनाकर लिखी गई हैं, जैसे—'कालिदास', 'बाबा सुकरात', 'घंटा कवि', 'कबीर', 'कबीर नगर', 'मशाल कथा' आदि। तो वहीं कुछ कविताएँ ग्रामीण परिवेश, पीछे छूटते संस्कार एवं विकृत होती सामाजिक व्यवस्था पर महीन कटाक्ष करती हैं, जैसे—'रंग आलता', 'वजह माँ के मौत की', 'ये देखो', 'लाल केशर बुआ', 'अँठई', 'यह मैं चाहता था', 'रेजगारी की थैली', 'भौजी का झुमका', 'आदम राग', 'पुरवा बयार', 'सावन', 'मेरे गाँव जाओ बरखा', 'आग में भीगी', 'इन्द्रधनु', 'मेरी देह पर', 'पिथौरागढ़ की बस में', 'देवलथल की बदलियाँ', 'सतुआन', 'कतरनी', 'कुलवाँसी आम' 'बढ़ावन', 'हल्दी', 'लाजवंती', 'मूली का अचार', 'अक्षत यौवन', 'आम', 'जीभ से कुछ सवाल', 'पुरखों ने कहा था', 'पैरासीटामोल', 'कुछ तो गड़बड़ है', 'तीन बार भौंकते हैं कुत्ते', 'मूँछ', 'पाचवाँ पाया', 'नागपंचमी', 'खुजली', 'लूट कला बन चुकी है', 'शिकारी', 'कोई आ रहा है', 'अँधेरा', 'रक्त की नदी', 'उसके आने की तारीख', 'उजास की व्याख्या', 'आपदा में फँसे लोग' आदि तो कुछ कवि के आत्मबोध की कविताएं हैं , जैसे- 'नाम', 'फटा हुआ समय', 'जाना', 'वह आ गया है', 'स्वागत' आदि।

'जब कह नहीं पाता' की विवशता के दंश से प्रारम्भ होकर **'स्वागत'** पर समाप्त होता संकलन कवि की उद्दाम जिजीविषा, आशा, कर्तव्यबोध, निष्ठा तथा नई परिभाषा या नए प्रतिमान गढ़ने की आतुरता का सूचक है। 'स्वागत' शीर्षक कविता में कवि आह्वान करता है कि—

"आओ
उसका स्वागत करो
कि स्वागत की परिभाषा बन जाए।"[1]

और अंत में कहता है, कि—

"इस कविता में
अगर नहीं सुनाई देती उसकी पदचाप,
अगर नहीं दिखाई देते उसके पाँव के निशान,
तो अपने भीतर की व्यग्रता से पूछो—
तुम्हें किसका इंतज़ार है??"[2]

इसी इंतज़ार ने कवि के भीतर दाहकता पैदा की, जिसके परिणामस्वरूप उसके अंतर से 'दहन राग' फूट पड़ा।

लेखनी जब मौन होती है, तो स्थिति विध्वंसक हो जाती है। लेखनी की मुखरता ही समाज की उन्नति का आधार है। कवि ने अपनी इस पीड़ा को अभिव्यक्ति दी है। जब हृदय में दाहकता हो, कुछ कह न पाने की विवशता हो, तब दहन राग ही मुखरित होता है। दहन राग का प्रारम्भ ही कवि की इस विवशता से हुआ है। संकलन की प्रथम कविता 'जब कह नहीं पाता' में कवि लिखता है—

"कितना उदास हो जाता हूँ कभी-कभी,
कितना गरीब हो जाता हूँ कभी-कभी,
अकेला
और लगभग निरीह
मन करता है
निकल पड़ूँ कबीर की झोली उठा,
गाँव-दर-गाँव, शहर-दर-शहर माँगने भिक्षा
कहता हूँ
सुनो तुम्हारे द्वार पर आया हूँ, झोली फैलाए खड़ा हूँ
डाल दो इसमें कुछ
एक आबाद नदी दे दो मुझे
एक हरा-भरा पहाड़ दे दो मुझे
जिससे साँस में भर तृप्त होती है धरती
वह हवा
अपना प्यार ही डाल दो
अपने घर से एक तीली लाओ
और जला दो इस बुझी मशाल को
इतना बारूद तो ज़रूर बचा होगा
तुम्हारे पास"[3]
सबसे बड़ा संकट टल सकता है,
सबसे खराब वक्त भी बदल सकता है।
जल सकती है बुझी हुई मशाल
यह भरोसा ही दे दो
कितना उदास हो जाता हूँ कभी-कभी,
कितना गरीब हो जाता हूँ कभी-कभी,
जब कह नहीं पाता कविता में
अपनी ही बात।"[4]

एक कवि स्वयं को कितना असहाय महसूस करता है, जब वह अपनी बात नहीं रख पाता। यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर अप्रत्यक्ष रूप से छाई घोर कालिमा की ओर संकेत करता है तथा एक बड़े विनाशकारी समय की ओर भी इंगित करता है। 'दहन राग' शीर्षक कविता में कवि ने इस विनाश-लीला की ओर संकेत भी कर दिया है। कवि लिखता है, कि—

"तीसरा दहन राग,
इस बार कुछ ज़्यादा
ज़ोर से जागी है भूख,

एक ओर कृष्ण और अर्जुन खांडव जला रहे हैं,
दूसरी ओर जारी है जलियाँवाला बाग
भाई रे
सामान्य मौत अब नसीब नहीं होगी
जारी है तीसरा दहन राग।"[5]

उनकी इस संकलन की दूसरी कविता अर्वाचीन को प्राचीन की कसौटी पर कसकर देखने का प्रयास है, जो एक प्रकार से पाठक को दर्पण दिखाती-सी जान पड़ती है। आदिकवि की लुप्त होती करुणा और वर्तमान कवियों की अर्थलोलुपता भी इस दुर्गति का कारण है। **'बहेलिया और कवि'** शीर्षक कविता में स्वार्थवश सत्य न कह पाने वाले एवं अपने कर्तव्यबोध से रहित अर्थलोलुप कवियों के सम्बन्ध में कवि लिखता है —

"समय बदला
आह से शाप के बीच,
रस, छन्द और ध्वनि-अलंकार मिले
समय की महीन ध्वनियों का अंकन मिला
नई ऊँचाई, नए प्रतिमान मिले
परिभाषा मिली"

आगे कवि प्रश्न उठाता है—

"पूछते हैं मुर्दे
कहाँ छूट गई जीवन की वह तड़प,
जिसे नाम मिला कविता
परिभाषा मिली तो करुणा कहाँ छूट गई
वो आह! कहाँ छूटी, कहाँ छूट गई कविता के
शापकी ताकत, कहाँ गए कवि"[6]

और अंत में व्यंग्य करते हुए कहता है—

"जाने कितने मुर्दे पूछ रहे हैं
ओ कवि
तुम कटोरा लिए बहेलिए के पीछे
क्यों भाग रहे हो।"[7]

'कालिदास' शीर्षक कविता में कवि ने कालिदास के बहाने चमत्कार उत्पन्न करने अथवा बेवजह चर्चा में बने रहने के लिए अनावश्यक एवं बेतुके बिम्बों का प्रयोग करने वाले कवियों पर व्यंग्य किया है। ऐसे कवियों की चुटकी लेते हुए कहता है, कि—

"राजा के घोड़ों के पाँव की
धूल उड़ाकर
धरती बना दी, अच्छा नहीं लगा
धरती को भी यह बिंब अच्छा नहीं लगा
मकड़ी अपने बुने जाल में फँसती है,
कवि अपने बिंबों में"

आगे कवि कहता है—

"कावेरी क्या
किसी नदी के बारे में कोई कवि

यह कर नहीं सकता जो तूने कहा
मद की गंध आने लगी जल से"[8]
राजा के
जीत के वर्णन की खुशी में,
उपहार पाने की खुशी में
कावेरी को लान्छित कर दिया
यह तुमने क्या कर दिया कालिदास
जो नदी के वस्त्र उतारे,
वह कवि नहीं हो सकता
यह तुमने क्या कर दिया कालिदास।"[9]

'बाबा सुकरात' शीर्षक कविता में वे अनकहे ही बहुत कुछ कह गए। वे बता गए कि निडर, कल्याणकारी, सत्य को सत्य कहने का साहस रखने वाले गुरु एवं दार्शनिक का महत्व व्यक्ति, देश एवं समाज के लिए कितना आवश्यक है। 'बाबा सुकरात' शीर्षक कविता में कवि अनकहे सत्य, निर्भीकता और मानवीय मूल्यों का महत्त्व बताते हुए लिखता है—

"थोड़ी देर पहले बड़ा खिन्न था मन
सचमुच भरोसा उठ गया था
अच्छे लोग बचे हैं समाज में आए तो याद आ गए
कई नाम और सुलझ गया वह भी
जो उलझा था मन में
बाबा सुकरात आते रहना
जैसे आ गए अचके में आज। "[10]

प्राकृतिक दोहन, बढ़ते प्रदूषण, भूमंडलीकरण के परिणामस्वरुप उत्पन्न होने वाली समस्याओं तथा उर्वरको एवं कीटनाशकों के बढ़ते प्रयोग के फलस्वरूप बंजर होती धरती और इन सबसे उदासीन सत्ता एवं बाज़ारवाद के समर्थन में छन्द रचते कवियों के सम्बन्ध में अपना मन्तव्य महाकवि माघ के बहाने से दिया है। कवि महाकवि से आग्रह करता है, कि-

"हे महाकवि!
मदद करो अपने इस निर्बल
और गूँगे ग्रुप की, कोई मेरी नहीं सुनता।
ज़रा ज़ोर से कह दो यह बात—
प्रकृति
आक्रमण पर है।"[11]

'घंटा कवि' शीर्षक कविता में कवि उन्हें याद दिलाते हुए लिखता हैं—

"तुम्हारे घंटे पर सब यकीन करते हैं
तुमने दिया कविता को नया अर्थ
तुमने पत्थर को पानी से समझाया, वो रीति कायम है,"[12]
तुम्हारे घंटे की आवाज़ सुन खिल-खिल हँसती धरती
समुद्र से निकल आई थी।

आसन्न प्राकृतिक संकटों से चिंतित कवि 'घंटा कवि' कविता में प्रकृति की रक्षा का संदेश देता है और महाकवि से कहता है, कि—

ओ महाकवि!
एक बार फिर
उस हिमालय को हाथी की तरह बिठा दो
एक तरफ सूरज़, एक तरफ चाँद का घंटा लटका दो।
जितनी ताकत बची हो तुम्हारे पास समेट लो।
देखो और अगर सच लगे,
कह दो अपना घंटा बजा
कह दो
हवा साँस लेने लायक नहीं
कह दो
पानी पीने लायक नहीं
कह दो
अन्न देना बंद करने वाली है धरती
कह दो
वापस जा रही है गंगा
प्रलय शैया पर है देश
हे महाकवि!
मदद करो अपने इस निर्बल
और गूँगे ग्रुप की, कोई मेरी नहीं सुनता
ज़रा ज़ोर से कह दो यह बात
प्रकृति
आक्रमण पर है। "[3]

'मशाल कथा' नामक कविता में साहित्य को नियंत्रित करती राजनीति का मुख्य कारण साहित्यकारों में आत्मसम्मान का अभाव बताया गया है। निराला के बहाने कवि ऐसे साहित्यकारों पर तीखा व्यंग्य करता है। कवि लिखता है—

"आश्वासन था आएँगे और नहीं आए नेहरु।
नेहरु के आने-न- आने में कुछ नहीं था
निराला के लिए
वो तो साँस तेज़ हो रही थी निराला की और इस तरह
भभक रही थी मशाल, जैसे चीख रही हो चिंग्घाड़ मार
और आख़िरी बार निराला के साँसों के संग
तेज़ भभकी, तेज़ उड़ी और निकल गई जाने कहाँ,
गायब हो गई एकाएक।"[14]

कवि आगे लिखता है—

"इसे जलाए रखना निराला
कहा था प्रेमचंद के मरने के पहले
जलेगी जब तक, आगे चलेगी जब तक, बचा रहेगा देश
गांधी से छीनकर लाया हूँ, इसे बहुत कठिन था समय
तगड़ी थी जंग, भरोसे की मशाल है यह"

तब से बीत गया जाने कितना समय
बदले कितने मौसम
गाए गए आजादी के कितने तराने
साँप के फन से थपथपाई गई पीठ
किसी को पता न चला
कहाँ गई मशाल और किस हाल में है
नागार्जुन ने की मसान साधना
सात दिन सात रात
किया विश्वामित्र की गायत्री का विधान
उनके पास आई मशाल, बताया
नेहरू के न आने से नहीं बुझी
न निराला के साँसों के संग उड़ी, यह झूठ है
वह उड़ी, अफवाह है सरासर साजिश है यह कहना
कि वह गायब हो गई
जब बुरा नहीं लगा किसी लेखक को
जब नहीं किया किसी लेखक ने नेहरु का विरोध
जब किसी लेखक ने नहीं छोड़ा अपना पद, अपनी सुविधा.......

इसके बाद कवि बताता है कि समय तो बदल गया, पर साहित्यकारों का आत्मसम्मान कमज़ोर पड़ गया और तभी से चाटुकार साहित्यकार अपना आत्मसम्मान, स्वविवेक तथा स्वाभिमान को खोकर राजनीति के पीछे बुझी हुई मशाल लिए चलते हैं। कवि लिखता है-

"जब से खो दिया लेखकों ने अपना आत्मसम्मान,
तब से राजनीति आगे चलती है
और वह उनके पीछे चलती है बुझी हुई।"[15]

इस संकलन की लगभग सभी कविताएँ श्रेष्ठ हैं, किन्तु जिस कविता ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया, वह है निलय उपाध्याय की '**ताजमहल**' शीर्षक कविता। निलय उपाध्याय की '**ताजमहल**' शीर्षक कविता कथ्य एवं शिल्प, दोनों ही दृष्टियों से सर्वश्रेष्ठ कविता कही जा सकती है। इस कविता में प्राचीनकाल, मध्यकाल एवं आधुनिक काल की ऐतिहासिक घटनाओं का वास्तविक चित्रण इतनी कुशलता से किया गया है, जो इसे महत्त्वपूर्ण स्थान की अधिकारिणी सिद्ध करता है। ऐतिहासिक यथार्थ के साथ-साथ तत्कालीन भौगोलिक स्थितियों का भी सुन्दर संयोजन कविता को प्राणवान बनाता है। प्रेम एवं वासना के धरातल पर बुनी गई यह कविता पाठक के मन में कई सवाल छोड़ जाती है। '**ताजमहल**' कविता की शुरुआत ही कवि की इस स्वीकारोक्ति से होती है, कि—

"किसी का प्यार पुण्य है,
किसी का प्यार पाप। "[16]

इसी पाप और पुण्य के बीच संघर्षरत प्यार की दास्तान है, यह कविता। प्यार का वास्तविक दस्तावेज़ है, यह कविता। क्या एक प्रेमी-हृदय हज़ारों-हज़ार स्त्रियों को नरक के दलदल में धकेल सकता है? क्या एक प्रेमी-मन एक स्त्री के लिए हज़ारों स्त्रियों की कई पीढ़ियों को वेश्यावृत्ति के लिए बाध्य कर सकता है? किन्तु, आगरा की बेड़नें इसका ज्वलन्त प्रमाण हैं।

इतिवृत्तात्मक या वर्णनात्मक शैली में लिखी गई यह कविता अत्यन्त सुन्दर बन पड़ी है। उदाहरणस्वरुप इस कविता की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं—

"खड़ा हूँ
महर्षि अंगिरा के तपोवन
महाभारत के अग्रवन में यमुना के तट पर।
मोहब्बत का प्रतीक बन चुका ताजमहल
आँखों के सामने है और आँखों से दूर
यमुना की दो पाटों के बीच
घने कुहरे में जाने कितनी सदियाँ
जहाँ यमुना की कल-कल
और पंछी के कलरव से
अंगिरा
बृहस्पति और शुक्र को ज्ञान देते थे
जहाँ कदम्ब की डाल पर बैठ
मुरली बजाते थे अपने किसन कन्हैया
और सम्मोहित गोपियों के संग
नाचती-गाती आती थीं बेड़नें।"[17]

इस कविता में नख-शिख वर्णन अत्यन्त प्रभावशाली और कलात्मक रुप में उपस्थित हुआ है—

"सुबह के
सिंदूरी आसमान की तरह
चौड़े ललाट के नीचे हिरण की
छलाँग-सी भौंहें।
भौंहों के नीचे चाँद की गोद में बैठे
खरगोश-सी,
नन्दन वन के बेर-सी
कजरारी और मदभरी आँखें
सुग्गे की ठोर-सी
उनकी नाक।"[18]

आगे कवि रुप-सौन्दर्य का चित्रण करते हुए लिखता है—

"और वे रसीले
लाल-लाल होठ,
जिन्हें देख आम पेड़ पर फट जाते थे।
कोमल कपोल जैसे पुरइन के पात पर
छूट गई हो चातक की प्यास
सुराहीदार गर्दन के ठीक ऊपर ठुड्डी के पास
बुरी नज़रों से बचाने के लिए लगा
काला बूँदीदार गोदना।"[19]

आभूषणों एवं रुप-सज्जा का चित्रण कवि की सूक्ष्म दृष्टि का परिचायक है। उदाहरणार्थ—

"गोटेदार चोली,
घाघरा
ओढ़नी

कदम्ब के तने के रंग की", [20]
बरगद के बरोह से लंबे केश,
केशों के बीच तमगे सा चौड़ा माँग-टीका।
सिर पर कतार में बंदनवार की तरह जड़े
ताँबे के सिक्के
माथे पर गहरी लाल बिंदी,
नाक में सोलह बूँद की पीतल की नथिया
कान में पंखुड़ियों के खिले फूल
गले में
चाँदी की हँसुली और गुरिया की माला
हाथ में कड़ा-चूड़ा,
कमर में करधनी
पैरों में कड़ा-बिछिया
सब कहते
गहने तो बेड़नों के लिए बने हैं,
बेड़नें गहनों के लिए"[21]

ताजमहल की नक्काशी एवं उसकी सूक्ष्म कलाकृति अथवा बनावट का वास्तविक वर्गीकरण एवं उचित वर्णन शिल्पकला तथा देश काल एवं स्थान विशेष की कला का अद्‌भुत संयोजन, उनकी स्थापत्य एवं निर्माण के सम्बन्ध में उनकी विशेषज्ञता को दर्शाता है। भारतीय एवं मुगल शैली के तार को अद्‌भुत तानेबाने से बुन कर ताज की सुन्दरता का रहस्य एवं बेडनों की वेश्यावृत्ति का इतिहास अपनी सर्वोच्च ऊँचाई को प्राप्त कर गया है। बेडिया जनजाति की स्त्रियां आज वेश्यावृत्ति के लिए प्रसिद्ध हैं। किसका प्यार था, जो उन्हें इस नर्क में ले आया। वे बेडने जो कभी राई नृत्य कृष्ण की रास में करती थीं। वे ही बेडने आज कामपूर्ति का साधन बनी हैं। कवि प्रश्न उठाता है कि किसके प्रेम ने उन्हें इस नरक में ला खड़ा किया? जो बेड़नें कभी श्रीकृष्ण की रासलीला में नृत्य करती थीं, वे आज काम-पूर्ति का साधन क्यों बन गईं? अपने तर्क के समर्थन में कवि इतिहास का सहारा लेता है। कवि ने बेड़नों का जो इतिहास प्रस्तुत किया वह निःशब्द करने वाला है-

"वाल्मीकि के आश्रम में परित्यक्त सीता ने
जब जन्म दिया लव-कुश को, रंग पंचमी का दिन था
पहली बार बेड़ने नाची थी, सीता जमीन में समा गई
गाया गीत
घर की मालकिन लड़की होगी
दूल्हा जमाई होगा, बड़ी बहन शादी नहीं करेगी
और आरम्भ हुई सत्ता स्त्रियों की
वाल्मीकि
तुलसी
अचंभित,
लोक कला की सरस्वती बन चुकी थी
तुलसी ने उस बेड़न के हाथ का पिया पानी
जो तानसेन की उस्ताद थी
नहीं मिली

बखान की कोई उपमा"[22]
तो कहा बेड़ने, बेड़नों की तरह सुंदर हैं
जो काम आई सीता के?"

आगे कवि लिखता है—

"किसी का जन्म हो,
किसी की शादी हो
प्यार और आनंद का कोई भी पैमाना
बुंदेलखंड में बिना बेड़न के छलकता नहीं था"[23]

वही यमुना का क्षेत्र, जो कभी ऋषि अंगिरा का तपोवन था, आज ताजमहल के लिए प्रसिद्ध है। किन्तु इस ताज ने न जाने कितनी बेड़नों के प्रेम को कलंकित कर दिया। यही एक अकेली कविता कवि को श्रेष्ठ कवियों की पंक्ति में सम्मिलित करने के लिए पर्याप्त है। इसकी एक-एक पंक्ति भाव एवं अर्थ-गाम्भीर्य की दृष्टि से अद्वितीय और ग्राह्य है। कुल मिलाकर यह एक पूरी कविता निलय उपाध्याय को एक श्रेष्ठ कवि सिद्ध करने में सक्षम है।

"ताजमहल का उत्सव था
बुलावा भेजा शहंशाह ने
बेड़नों ने हिला दिया बगदाद
हिल गया बुखारा की और समरकंद।
बगदाद का कारीगर
पत्थर पर घुमावदार अक्षरों को तराश सकता था
एक बेड़िन की आँखों में संदेश का घुमाव
चुनौती बन गई
बुखारा का कारीगर
संगमरमर पर फूल तराशता था
बेड़न के खिले चेहरे ने हाथ रोक दिए।
गुम्बदों के निर्माण में दक्ष कारीगर
तुर्की के इस्तंबुल का था, बेड़न औरतों के
स्तन पर बाहर से पड़ी नज़र तो अब तक रचे
गुम्बद नक्काशी में छीटे हो चुके थे"[24]

इसकी सभी पंक्तियाँ महत्त्वपूर्ण हैं। सभी स्वयं सिद्धा हैं। अक्सर लंबी कविताएँ ढीली एवं अस्त-व्यस्त हो जाती हैं, किन्तु इसकी कसावट में कहीं भी कमी नहीं आ पायी है। अंत में, कवि जब लिखता है—

"सोचता हूँ
किसके प्यार का पुण्य है ताजमहल,
किसके प्यार का पाप। "[25]

तो एक हृदय को बेध देने वाली आह! हृदय से निकल पड़ती है। जो आज का कटु सत्य है। प्यार बलिदान मांगता है। यही प्यार किसी के लिए (ताजमहल) कोठियां (महल) बनवा देता है, तो किसी को कोठे पर भी पहुँचा देता है। अतः कवि का कथन सर्वथा सत्य एवं प्रासंगिक है। आगरा की बेड़ने इसका प्रमाण हैं।

उनकी **भाषा** सहज, सरल, बोधगम्य एवं भावानुकूल है। शब्द देशज एवं धरती से गहरे जुड़े हुए हैं। बिंबात्मक भाषा, इतिवृत्तात्मकता, आख्यानपरक चित्रण, संवादात्मकता तथा मानवीय राग से परिपूर्ण दृश्य कविता को ऊँचाई प्रदान करते हैं। उपमा, रुपक एवं मानवीकरण अलंकारों का सुंदर प्रयोग उनकी कविताओं में देखने को मिलता है।

'परीकने का डर', 'बतकही', 'चिल्ल-पों', जैसे प्रचलित मुहावरे, तथा 'डड़ार', 'उजबुजाहट', 'खिच्चा', 'बँसवार' जैसे स्थानीय शब्द उनकी रचनाओं में प्राण फूँकने का कार्य करते हैं। 'बरोह', 'कछार', 'नरगछुली', 'परात' एवं 'अगिन' जैसे आंचलिक शब्द उनकी धरती से जुड़े जीवनानुभवों को व्यक्त करते हैं तथा उनकी लोकभाषा पर पकड़, एवं यथार्थ जीवन-जगत से उनके प्रेम एवं लगाव को दर्शाते हैं। 'इंतज़ार', 'वजह' तथा 'अख़बार' जैसे अरबी-फ़ारसी शब्द तथा 'मास्क', 'पैरासिटामोल', 'साइकिल', 'टिफ़िन', 'पोकलैंड' एवं 'जेसीबी मशीन' जैसे अंग्रेज़ी शब्द भी उनकी कविताओं में स्वाभाविक रूप से प्रयुक्त हुए हैं। इससे भाषा कृत्रिम नहीं लगती, बल्कि अत्यंत सहज और प्रभावशाली बन जाती है। उनकी भाषा में कोई बनावट नहीं, वे स्वाभाविक रूप से उनकी रचनाओं में ढल जाती हैं। ऐसा प्रतीत होता है, भाषा स्वयं कवि की अनुगामिनी बन गई है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि निलय उपाध्याय की प्रकाशित कृति 'दहन राग' समकालीन हिन्दी कविता की एक श्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण कृति है। यह संग्रह अपने कथ्य, शिल्प, भाषा, संवेदना और वैचारिक प्रखरता के कारण हिन्दी काव्य-जगत में विशिष्ट स्थान का अधिकारी है।

संदर्भ-ग्रन्थ :

1. उपाध्याय, निलय. दहन राग. कविता— 'स्वागत', पृष्ठ-119, प्रथम संस्करण, 2021, अयोध्या (उ. प्र.): आपस पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, कौशल पुरी, फेज– 01, 2021, ISBN: 978-81-948225-54.
2. उपाध्याय, निलय, दहन राग, वही, पृ. 120.
3. उपाध्याय, निलय, दहन राग, कविता— 'जब कह नहीं पाता', पृ. 15.
4. उपाध्याय, निलय, दहन राग, वही, पृ. 16.
5. उपाध्याय, निलय, दहन राग, कविता— 'दहन राग', पृ. 30.
6. उपाध्याय, निलय, दहन राग, कविता— 'बहेलिया और कवि', पृ. 18.
7. उपाध्याय, निलय, दहन राग, वही, पृ. 19.
8. उपाध्याय, निलय, दहन राग, कविता— 'कालिदास', पृष्ठ-20.
9. उपाध्याय, निलय, दहन राग, वही, पृ. 21.
10. उपाध्याय, निलय, दहन राग, कविता— 'बाबा सुकरात', पृ. 23.
11. उपाध्याय, निलय, दहन राग, कविता— 'घंटा कवि' पृ. 25.
12. उपाध्याय, निलय, दहन राग, वही, पृ. 24.
13. उपाध्याय, निलय, दहन राग, वही, पृ. 25.
14. उपाध्याय, निलय, दहन राग, कविता— 'मशाल कथा' पृ. 35.
15. उपाध्याय, निलय, दहन राग, वही, पृ. 36.
16. उपाध्याय, निलय, दहन राग, कविता— 'ताजमहल', पृ. 54.
17. उपाध्याय, निलय, दहन राग, वही, पृ. 54 .
18. उपाध्याय, निलय, दहन राग, वही, पृ. 55.
19. उपाध्याय, निलय, दहन राग, वही, पृ. 56.
20. उपाध्याय, निलय, दहन राग, वही, पृ. 54.
21. उपाध्याय, निलय, दहन राग, वही, पृ. 55.
22. उपाध्याय, निलय, दहन राग, वही, पृ. 56.
23. उपाध्याय, निलय, दहन राग, वही, पृ. 57.
24. उपाध्याय, निलय, दहन राग, वही, पृ. 57.
25. उपाध्याय, निलय, दहन राग, वही, पृ. 58.

आधार ग्रन्थ :

1. उपाध्याय, निलय, दहन राग, प्रथम संस्करण, 2021, अयोध्या (उ. प्र.): आपस पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, कौशल पुरी, फेज-01, 2021. ISBN:978-81-948225-5-4.